प्रकृति का बदला

प्रो० राजेन्द्रपाल सिंह

प्रकृति का बदला

उपन्यास

प्रो० राजेन्द्रपाल सिंह

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110 002

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1991 : मूल्य : 4.00

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110 091

प्रकृति मानव की वास्तविक शिक्षक है। उसी ने मनुष्य को जीवन दिया, पाला-पोसा और संवारा है। हमारी कृतघ्नता किस रूप में प्रकृति को बदल रही है—इसी विचार का स्वरूप है प्रोफेसर आर० पी० सिंह की पुस्तक 'प्रकृति का बदला'।

प्रोफेसर राजेन्द्रपाल सिंह सुपरिचित एवं यशस्वी शिक्षाविद् हैं, जिन्होंने भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा आयोजित एक 'लेखक कार्यशाला' में सम्मिलित होने का अनुग्रह कर विज्ञान और तकनीक के सन्दर्भ में पर्यावरण, प्रदूषण, जनसंख्या-वृद्धि, पेड़ व वनों की हो रही क्षति जैसे विषयों को अत्यन्त ही सावधानी से प्रस्तुत पुस्तक में समाविष्ट किया है।

अपने सुधी पाठकों, विकास के क्षेत्र में कार्यरत कर्मियों के साथ यह पुस्तक नवसाक्षरों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी होगी, इसी मान्यता के साथ उन्हें समर्पित—

—कैलाश चौधरी
महासचिव

शफीक मेमोरियल
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-11001
27 फरवरी, 1991

प्रकृति का बदला

कैलाशपुर गांव का स्कूल आज सजा हुआ था। उसमें आज एक वैज्ञानिक भाषण देने आनेवाले थे। सारे गांव के लिए निमंत्रण था। भाषण गांव की तरक्की को लेकर होना था।

पिछले कुछ बरसों से इस गांव में काफी तरक्की हुई थी। सौर ऊर्जा से सड़कों पर रात को प्रकाश होता। बायो-गैस से घरों में चूल्हे जलते। जिनके पास गैस नहीं थी वह उन्नत चूल्हों से रोटी बनाते। गांव में दो सड़कें भी थीं और कुएं भी बड़े साफ-सुथरे थे। शहर से जोड़ने के लिए इस गांव में बस भी आती-जाती है।

इस गांव में एक स्कूल भी है जिसे गांव वालों ने

श्रमदान से बनाया है। साथ ही एक डाक-घर भी है। गांव में पंचायत है, जो सभी तरह से तरक्की चाहती है। खाद वितरण केन्द्र भी है और साथ ही वहां एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र भी है।

गांव के स्कूल में अकसर ही इस प्रकार के भाषणों का आयोजन होता रहता है तथा गांव वाले उन भाषणों को बहुत मन लगाकर सुनते हैं।

और दिनों की तरह आज भी गांव वाले स्कूल के मैदान में आकर बैठ गये। थोड़ी देर में आज के मेहमान भी आ गये। उनका परिचय स्कूल के हेडमास्टर ने कराया और पंचायत के सभापति ने उनका स्वागत किया। स्कूल में बोलने आये मेहमान दिल्ली की एक बड़ी संस्था में खेती के विशेषज्ञ थे।

भाषण देते समय उन्होंने अपने विषय का परिचय कराया। विषय था–'पर्यावरण'।

पहले भी कई बार इस विषय पर भाषण हो चुके थे, लेकिन आज इस भाषण के साथ ही मेहमान वैज्ञानिक एक आदर्श गांव का मिट्टी का ढांचा भी दिखलाने के लिए लाये थे। वह ऐसा गांव था जिसको अभी तक शहर के उद्योगों और कारखानों ने खराब नहीं किया था। साथ ही वह एक चित्र भी लाये थे जिसमें शहरी सभ्यता की सारी बुराइयां दिखाई दे रही थीं।

वैज्ञानिक महोदय ने, जिनका नाम अमर कुमार था, गांव वालों से सवाल पूछने को कहा। उन्होंने प्रश्नों के आधार पर बोलना प्रारम्भ किया। उन्होंने बताया कि किसी भी अच्छे गांव के लिए वहां के बसने वालों का बहुत जागरूक और समझदार रहना जरूरी है। उन लोगों को अच्छे-बुरे का पता होना चाहिए। सबको मिल-जुलकर रहना चाहिए। लड़ने-झगड़ने से तो केवल दूसरों को ही लाभ होता है, स्वयं का कोई लाभ तो नहीं होता।

लेकिन किसी भी अच्छे गांव के लिए दो बातें और भी जरूरी हैं। एक तो वहां की पैदावार अच्छी हो, और दूसरे वहां की प्रकृति से अधिक छेड़-छाड़ न की जाए।

अच्छी पैदावार को लेकर गांव वालों ने अनेक प्रश्न पूछे। क्या रासायनिक खाद का इस्तेमाल 'अच्छा' है? क्या दो-तीन फसलें होना 'काफी' हैं? कितनी तादाद की फसल 'अच्छी' मानी जाएगी? कितनी पैदावार को 'अच्छी' फसल कहा जाएगा?

अमर कुमार सुलझे हुए कृषि वैज्ञानिक थे। उन्होंने हर एक बात सब को समझा-समझा कर बताई। उन्होंने बताया कि रासायनिक खाद का इस्तेमाल काफी सोच-समझकर करना चाहिए। बिना मिट्टी को जांचें-परखे इस प्रकार के इस्तेमाल ठीक नहीं रहते। क्योंकि इस तरह की जांच के बिना जिस प्रकार की खाद चाहिए उसके बजाय हम कुछ और किस्म की खादें भी डाल सकते हैं। फिर

अकेली रासायनिक खाद का इस्तेमाल काफी नुकसान भी कर सकता है। रासायनिक खाद मिट्टी की ताकत को भी कम कर सकती है। उन्होंने यह भी बताया कि 'अच्छी' फसल का मतलब केवल यही है कि वह लागत से कम से कम दोगुनी अवश्य हो। लेकिन बहुत अधिक उपज के कारण किसान के मन में लालच भी पैदा हो सकता है। इस बात से तो किसान का नुकसान ही होगा, उसे जरूरी लाभ नहीं मिलेगा। अधिक आमदनी या पैसा अवगुण की जड़ है। वह आदमी को गलत रास्ते पर भी ले जा सकता है।

अमर कुमार ने जो सबसे अधिक महत्व की बात बतायी वह यह थी कि लोगों को पेड़ों का आदर करना चाहिए। पेड़ों से हमें फल मिलते हैं। गर्मी में छाया मिलती है। जरूरत के समय लकड़ी मिलती है। पेड़ विषैली गैसों को साफ करते हैं और साफ ऑक्सीजन (ओषजन) देते हैं। पेड़ों से आवाज की तेजी कम हो जाती है। पेड़ों के कारण ही वर्षा ठीक होती है। पानी का कटाव रुकता है और उनके पत्तों से अच्छी खाद भी बनती है।

"पर गांव में तो लोग पत्ते इकट्ठे नहीं करते!" एक ने कहा। "और शहरों में तो पत्तों को इकट्ठा करके जला देते हैं।" एक और गांववाला बोला।

"हालांकि गांव वाले पत्ते इकट्ठे नहीं करते, फिर भी

उन्हें लोभ होता है। पर शहर वाले तो एक अच्छी चीज को खराब करते हैं और प्रदूषण भी बढ़ाते हैं। इस प्रकार वह तो अपना दोहरा नुकसान करते हैं।" वैज्ञानिक ने उत्तर दिया।

"इसका मतलब यह है कि शहर वाले अधिक गलती करते हैं ?"

"अवश्य। शहर में तो प्रदूषण के अनेक कारण हैं– मिलें, कारखाने, मोटरें आदि धुंआ पैदा करती हैं और आवाज का स्तर यानी शोर को भी बढ़ाती हैं।" अगर कुमार ने बताया।

"आवाज का स्तर का क्या अर्थ है ?"

"हम लोगों के कान केवल एक स्तर तक ही आवाज झेल सकते हैं। स्तर बढ़ते ही कानों से सुनाई पड़ना बन्द भी हो सकता है। कान की भीतरी झिल्ली केवल 15 या 16 यूनिट आवाज तक ही बर्दाश्त करती है। इसके बाद की आवाज आदमी को बहरा बना सकती है।"

"अच्छा ! यह तो हमें पता ही नहीं था।" ज्यादातर लोगों ने यह अचंभे के साथ स्वीकार किया।

"मगर याद रखिए कि प्रकृति हमें केवल एक स्तर तक ही क्षमा कर सकती है। यदि हमने अधिक भूलें कीं तो वह हमें बिल्कुल भी माफ नहीं करेगी।" वैज्ञानिक ने आगे भाषण दिया–

उदाहरण के लिए हमें याद रखना चाहिए कि गांवों

में हरियाली ही गांव का प्राण है। वनस्पति की खाद इतनी ही आवश्यक है जितनी रासायनिक। यदि हमारा काम दो फसलों से चल सकता है तो तीन या चार उपजाने के लिये इस बात को हमें भूलना नहीं चाहिये कि अकेली रासायनिक खाद मिट्टी को अन्न-उपजाऊ बना तो देगी, मगर जमीन की ताकत को भी कम करेगी। यदि हमने जमीन से अधिक पानी लिया तो जमीन के भीतर पानी भी कम हो जायेगा।

प्रकृति ने हमें जीवन दिया है। जिन्दा रहने के साधन दिये हैं। पर इसका यह मतलब नहीं है कि हम उससे इतना मांगें कि उसके पास देने को ही न रहे। अगर हम सभी बड़े-बड़े धन्ना सेठों के यहां से भीख मांगेंगे तो वे सेठ खुद भी गरीब हो जायेंगे। प्रकृति की ताकत भी उससे अधिक नहीं है। अगर हम बिना सोचे समझे औलाद पैदा करेंगे तो एक दिन ऐसा आयेगा जब खेत उनका पेट नहीं भर पायेंगे। आज हम शायद यह सोच भी नहीं रहे कि हम अधिक बच्चे पैदा करके अपना कितना नुकसान कर रहे हैं। शायद हमने यह मान रखा है कि प्रकृति उदार और दयावान बनी रहेगी। पर सच तो यह है कि वह यह उदारता न जाने कब बन्द कर देगी, इसका अनुमान हमें अभी नहीं है।"

—गांव के प्रधान ने इन बात को और खुलासा करने को कहा। उसने कहा, "वैसे तो आप जो कह रहे हैं हमारी समझ में आ रहा है। मगर खेतों में अन्न पैदा होना कैसे

बन्द हो जाएगा ?"

"देखिए यह अभी तो नहीं हो रहा।" वैज्ञानिक अमर कुमार ने बताया—"पर अनेक उन्नत राष्ट्रों में इसकी चर्चा है। अधिक रासायनिक खादों के प्रयोग से यह हो रहा है कि अनेक देशों में भूमि परती या बंजर होती जा रही है। और साथ ही बजाय पैदावार बढ़ने के पैदावार घट रही है। लोगों का अनुमान है कि एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब कहीं की जमीन उपजाऊ नहीं रहेगी। उस समय दुनिया क्या खायेगी, यह हम सोच भी नहीं सकते।"

"आपकी बातें सुनकर तो बड़ी घबराहट होती है।" स्कूल के हेडमास्टर ने कहा।

"असल में बात घबराने की नहीं है बल्कि समझने की है। हम लोग कोई न कोई नासमझी कर बैठते हैं, फिर बाद में पछताते हैं। उदाहरण के लिये पहले अधिक सन्तान पैदा कर ली, फिर उसके पेट भरने के लिये अन्न उपजाया। जब अधिक पैसा आने लगा और पेट भर गया तब आराम की चीजों को इकट्ठा करने के लिए बढ़े। इस भूख के कारण अधिक पैसा पाने की इच्छा हुई। खेतों से और कमाया। फिर कमाना इतना बढ़ाया कि सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी को ही मार डाला।

देखिये न, कि कीट-नाशक दवाओं से हमने फसल तो बचाई मगर प्रकृति का स्वाद खो दिया। चीन देश में तो एक बार उन्होंने सारी मक्खी और चिड़ियां मार दीं। फिर उन्हें

पता चला कि उन्होंने कितनी बड़ी भूल की। इसी तरह की भूल हम लोग लगातार जंगल काट कर कर रहे हैं। वन-सुरक्षा एक नारा नहीं है, हमारी बड़ी जरूरत की चीज है। हमें पेड़, हरियाली आदि का बहुत ध्यान रखना चाहिए, जैसे पानी, खाद, निगरानी आदि। लेकिन उन्हें अपनी बरबादी का साधन नहीं बनने देना चाहिए।"

—इस प्रकार उन्होंने आदर्श गांव के लिये एक विचार दिया।

अमर कुमार जी अपना भाषण देकर चले गये। लोगों को वह बहुत पसंद आये। वह ऐसी-ऐसी बातें बता गये थे जो उनके बहुत काम की थीं। हर गांव वाला अपने खेतों को प्यार करता है। वह धरती को मां मानता है। वह धरती से फसल लेता है और उसी फसल के सहारे अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करता है। लेकिन हर गांव वाला यह नहीं जानता कि हरियाली उसके लिये क्यों जरूरी है। न उसे जमीन के भीतर के पानी के बारे में ही ठीक से जानकारी है। जमीन से पानी भी निकलता है पर वह पानी बरबाद न हो यह उसे ठीक से पता नहीं है। इन्हीं सब बातों को आज अमर कुमार जी ने समझाया था

और बताया था कि जमीन की सही देख-रेख क्या है। आज उन्हें रासायनिक खादों को ठीक से समझने का अवसर मिला।.....

ऐसे तो कैलाशपुर के स्कूल में हमेशा ही कुछ न कुछ होता रहता है पर आज का भाषण लोगों के मन को छू गया। उन्होंने यकायक पाया कि लोग अपने आसपास के वातावरण को ठीक से नहीं देखते। मनचाहे पेड़ काट देते हैं, कहीं भी कूड़ा फेंक देते हैं। सन्तान को पृथ्वी पर बोझ नहीं मानते। सोचते हैं कि जिस ईश्वर ने हाथ दिये हैं उसी ने मुंह भी दिया है। –लेकिन जमीन इतने आदमियों का बोझ कैसे झेलती ? यह तो सोचा ही नहीं। जमीन को पेट पालने और ठीक से रखने के बजाय लोगों ने उसे उद्योग-धंधा मान लिया है। ऐसा क्यों ? लोगों का सोचने का ढंग इतना क्यों बदल गया है ? क्या वास्तव में 'कलयुग' आ गया है ? अजीब-अजीब से सवाल लोगों के मन में उठ रहे थे।

इसीलिये उस शाम को गांव के मुखिया की चौपाल पर जब लोग इकट्ठे हुए तो फिर एक बार लोगों ने उस बात की चर्चा शुरू की जो वह सुबह भाषण में सुन चुके थे।

पर उस शाम चौपाल पर दो लोग और भी थे, जो सुबह नहीं थे। उन लोगों की बातें उन दोनों ने भी सुनीं। उनमें एक बैंक के अधिकारी थे और दूसरे थे जाने-माने समाज सेवक। उन समाज सेवक महोदय का नाम राम प्रसाद था। वह देश-विदेश घूम चूके थे। इसीलिए राम प्रसाद जी को गांव वालों की बातें बहुत अच्छी लगीं। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि गांव वाले इतने समझदार हैं। वह लोग देश की समस्याओं को ठीक से समझने की कोशिश करते हैं। इसलिये उस चर्चा में वह स्वयं भी भाग लेने लगे। गांव के मुखिया जी ने कहा, "क्या सारी समस्याएं एक दूसरे से नहीं जुड़ी हैं ? अधिक औलाद और अधिक उपज का कोई सम्बन्ध नहीं है ?"

"है न। यही तो आज अमर कुमार जी भी कह रहे थे। अधिक लोग होंगे तो अधिक जरूरतें होंगी। उनको पूरा करने के लिये किसानों को और अधिक पैदावार करनी होगी। अधिक पैदावार के लिये अधिक रासायनिक खाद इस्तेमाल करने होंगे। अधिक रासायनिक खाद के इस्तेमाल से जमीन कमजोर हो जाएगी। फिर तो एक न एक दिन अकाल पड़ना ही है।"—स्कूल के मास्टर साहब ने कहा—

"तो क्या ज्यादा पैदावार बुरी चीज है ?" किसी ने सवाल पूछा।

"सवाल ज्यादा पैदावार होने का नहीं है। पैदावार

भरपूर होनी चाहिए। रासायनिक खाद भी बुरे नहीं हैं, पर बुरा तो है उनका अधिक इस्तेमाल और लालच। बुरी तो है नासमझी से औलादें पैदा करना।"—मास्टर जी ने उत्तर दिया।

"इसीलिए तो कहते हैं कि जिन्दा रहने के लिये रोटी चाहिये। पर ज्यादा रोटी भी तो जहर का काम करती है। आप लोग क्या यह भी नहीं जानते ?" एक ने याद दिलाया।

"हां यह बात तो सही है।" राम प्रसाद जी बोले, "हर काम सोच समझ करके ही करना चाहिये। नासमझी से हम लोग अपना काम बिगाड़ ही सकते हैं। आइये आपको मैं एक सच्ची कहानी सुनाता हूं–

एक बार मैं उत्तरी अफ्रीका में घूमने गया था। मैंने मिस्र, ईराक, लीबिया आदि देशों को देखा है। आप जानते हैं कि संसार का बहुत बड़ा रेगिस्तान अफ्रीका में ही है। उसका नाम सहारा है। इस सहारा की कहानी बड़ी दर्दनाक है। मिस्र की एक रानी ने अपने प्रेमी के लिये लकड़ियों का मन्दिर बनवाया था। इस मन्दिर को वह इतना बड़ा बनाना चाहती थी कि संसार में उससे बड़ा और अच्छा मन्दिर कोई न हो। उसी रानी की आज्ञा से वहां का सबसे घना जंगल काट डाला गया। उस जंगल के कटने से वहां बरसात कम होती गई और आज वहां इतना बड़ा रेगिस्तान बन गया है। –यही नहीं, और भी

ऐसी चीजें मैंने कई बार देखीं। इससे लगता है कि आदमी अकसर इसी प्रकार की भूलें करता रहा है। वह शायद कुछ सीखना भी नहीं चाहता।"

मुखिया जो ने कहा, "आप तो राम प्रसाद जी काफी निराश लग रहे हैं। यह सही नहीं है कि आदमी अपनी भूलों से कुछ नहीं सीखता। वह सीखता है, अगर उसे कोई ठीक से बताने वाला मिल जाये।"

और लोगों ने भी मुखिया जी की बात दुहरायी। "यह सही है, आज की बात जो हम लोगों को बताई गई उससे हमें लाभ हुआ है। राम प्रसाद जी ने भी जो बताया वह भी बड़ा ही फायदेमन्द है। कम से कम हम एक-दो बातें तो याद रखेंगे ही।"

उस रात इसके आगे बातें नहीं हुईं। सब लोग अपने-अपने घर जाकर सो गये।

—मगर दूसरे दिन वही बात एक बार फिर उठ बैठी। रात में सोचने के कारण कई लोगों ने उस विषय पर सपने देखे थे। वह लोग अपने सपनों की बात करना चाहते थे।

आज शाम को फिर लोग मुखिया जी की चौपाल पर आकर बैठ गये। "हां, तो कौन सुनायेगा अपने सपने की बात ?" मुखिया जी ने पूछा।

"मैं सुनाऊं ?" यह बात किशन ने कही। किशन स्कूल में पढ़ता था। पढ़ने में वह बहुत होशियार भी था।

"चलो तो बात एक बच्चे से ही शुरू हो।" कई लोगों ने एक साथ कहा।

किशन ने बात कहनी शुरू की—

"मैंने सपने में देखा कि बड़े-बड़े पहाड़ हैं। लेकिन उन पहाड़ों पर न घास है और न पेड़। पेड़ों के बिना पहाड़ नंगे लग रहे हैं। फिर वहां पर चिड़ियां भी नहीं हैं। पहाड़ों पर ठंडक होती है पर वहां बहुत गर्मी है। मैं पहाड़ों पर प्यासा घूम रहा हूं। वहां कोई आदमी भी नहीं है जिससे यह पूछूं कि पानी कहां मिलेगा। प्यास से मेरा बुरा हाल था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं कहां जाऊं। सूरज भी निकला था। खूब लाल आग जैसा। मुझे लग रहा था कि मैं वहीं गिर जाऊंगा।

इतने में वहां से एक बूढ़ा आदमी निकला। उसके कपड़े फटे थे। ऐसा लग रहा था कि उसने कई दिन से खाना नहीं खाया है। वह चल भी धीरे-धीरे रहा था। मैंने उसे देखकर जोर से आवाज दी—

'बाबा, मेरी बात सुनो।'

वह मेरी ओर मुड़ा। पहले उसने मुझे देखा और फिर हंस कर कहने लगा—'मैं किसी का बाबा नहीं। तुम कौन हो, मैं नहीं जानता। पर यहां से भाग जाओ।'

'मैं कहां जाऊं ? मुझे तो प्यास लगी है।' मैंने कहा।

'यहां कहीं पानी नहीं है।' उसने उत्तर दिया।

'क्यों यहां पानी क्यों नहीं है ?' मैंने पूछा। पर वह आदमी काफी नाराज हो गया—'क्या मुझे यह भी बताना होगा कि यहां पानी क्यों नहीं है ?' वह जोर से बोला।

'पर पानी के लिये मैं कहां जाऊं।' मैंने विनती की।

'वहीं जहां और सब चले गये।'

'पर कहां चले गये वह लोग ?'

'वहीं जहां जंगल चले गये।'

'आप पहेली मत बुझाओ। मुझे तो ठीक से बताओ। प्यास के मारे मैं मर रहा हूं।' मैंने फिर विनती की। वह शायद तब तक शांत हो गया था। उसे मुझ पर दया भी आ रही थी। इसलिये उसने मुझे बात बताई—'देखो कभी इन पहाड़ों पर घने जंगल थे। खूब घास थी। झाड़ियां थीं, खूब सारे पक्षी थे, जानवर थे, खूब पानी भी बरसता था और नदियों में पानी बहुत था, फलों से पेड़ लदे रहते थे। पर एक बार ऐसा हुआ कि सरकार ने बड़े-बड़े ठेकेदारों को जंगल काटने की इजाजत दे दी। खूब पैसा भी लिया बदले में। उन ठेकेदारों ने बड़ी-बड़ी मशीनें लगाईं और सारे जंगल काट लिये। पहले कुछ

साल कम बारिश हुई, मगर हुई। फिर हर साल बारिश लगातार कम होती गई। खेती सूख गई। नदियां सूख गईं। फिर अकाल पड़ा। कुछ भी खाने को पैदा न हुआ। लोग या तो मर गये या भाग गये। खूब बीमारियां भी फैलीं। यहां तक कि परिन्दे भी मर गए। अब यहां कोई नहीं रहता। इसलिए यहां न पानी है, न पेड़ हैं और न इन्सान हैं। नदियां सूख गई हैं, घास तक जल गई है।'

'पर आप तो यहां रहते हैं ?' मैंने कहा।

'अवश्य, पर मैं कहां जा सकता हूं ? मुझे तो यहीं रहना है। मैं तो उन सभी मरे हुए आदमियों की आत्मा हूं !' –वह बोला।

'पर आत्मा तो दिखाई नहीं पड़ती !' मैंने बात कही।

'हां पर भूत तो दिखलाई पड़ते हैं।'

तो क्या आप भूत हैं ?' मैं फिर बोला।

'तुम मुझे और क्या समझते हो ? जहां कोई नहीं रहता, जहां कुछ पैदा नहीं होता, वहां केवल भूत ही तो रहते हैं।'

इसके बाद मेरा गला रुक गया–डर और प्यास दोनों से। मुझे इतना डर लगा कि नींद भी गायब हो गई। पर यह सपना इतना भयानक था कि मैं अभी तक कांप रहा हूं। डर इस बात का है कि यदि यह सपना सच हो जाये तो क्या हो ?

"शायद दुनिया का अंत हो जायेगा।"

मुखिया जी बोले–"आप क्या समझते हैं कि दुनिया इतनी मूर्ख है ?" –किसी ने पूछा।

"क्या मतलब ?" मुखिया जी ने पूछा।

"यह तो एक बच्चे का सपना है। इसका यह तो मतलब नहीं कि यह सब हो सकता है। पहाड़ों को क्या ऐसे साफ किया जा सकता है ? क्या पेड़ न रहने पर मौसम बदल सकते हैं ? पेड़ काटने पर तो और पेड़ उग जायेंगे ?" एक ने बड़े ऊंचे स्वर में कहा।

"क्यों ? यह तो सब हो सकता है ?" मास्टर जी ने कहा। "पेड़ काटने पर दुबारा लगाने पड़ते हैं। इसीलिये भारत में पेड़ लगाने की योजना भारत सरकार चला रही है। वैसे भी यदि जंगल कट जायें तो मौसम बदल सकता है। मौसम तो अनेक बातों पर निर्भर करता है। मगर बारिश के लिये पेड़ों का होना बहुत जरूरी है। वैसे भी आपने देखा होगा कि जहां हरियाली है वहां बारिश होती है। आपने सुना भी होगा कि राजस्थान के एक इलाके में तो दस वर्ष तक भी बारिश नहीं होती।"

"हां, हां यह तो हम लोगों को मालूम है। पर यह शायद सबको नहीं मालूम कि पहाड़ों पर भी ऐसा हो सकता है।" मुखिया जी ने कहा।

"कभी-कभी सपने सच का संकेत देते हैं। जो किशन ने सपने में देखा, वह कभी सच भी हो सकता है। पर हमें

याद रखना चाहिये", राम प्रसाद जी ने कहा, "कि आदमी काफी बुद्धिमान है। वह मतलब के सारे काम करता है। मतलब की सारी चीजें भी जानता है। इसलिये हमें यही उम्मीद करनी चाहिये कि जो पढ़े-लिखे लोग कहते हैं वह हम सभी के लाभ का होगा। और उसे सभी लोग मान भी लेंगे।"

"परेशानी की बात तो यही है कि आदमी पढ़े-लिखों की बात नहीं मानता। वह तो समझता है कि सब कुछ उसी को पता है औरों को कुछ नहीं मालूम है।" मुखिया जी बोले।

पर धीरे-धीरे लोग बदल रहे हैं।" मास्टर जी ने बताया। "देखिये न, एक दिन था जब लोग चाय नहीं पीते थे। पर आज सब पी रहे हैं। एक दिन लोगों को खाद का पता नहीं था। पर समय के साथ वह सभी प्रकार की खाद और रासायनिक दवाओं के बारे में जान गये। इसी तरह हमें आशा करनी चाहिये कि लोग अपने काम के लिये और तमाम चीजें भी सीख जाएंगे।"

गांववालों ने मास्टर जी की बातों को सही माना।

उन्होंने भी कहा कि लोग बड़े ही चतुर हैं। अपने लाभ की बातें सभी जानते हैं और अपने हित का ही काम करते हैं। इसलिए अधिक निराश होने की जरूरत नहीं है।

इन्हीं बातों के बीच किसी ने कहानी और सपने की बात कही। सबका फैसला हुआ कि कोई एक सपना और सुना जा सकता है। फिर तो सोने का समय हो जायेगा। अब की बार बारी गांव के हंसोड़े की थी। वैसे तो वह पढ़ा-लिखा था पर फौज से रिटायर होने के बाद गांव में ही खेती करता था। चूंकि वह सबको हंसाता रहता था, इसीलिये उसका असली नाम लालमन किसी को याद नहीं था। सब उसको हंसोड़ा जी ही कहकर बुलाते थे।

हंसोड़ा जी की कहानी इस प्रकार थी—

"आप तो जानते ही हैं कि कल रात मच्छर बहुत थे। मुझे वैसे ही मच्छर कम काटते हैं क्योंकि उनको पता है कि मैं एक अच्छा फौजी हूं। उन्हें दुश्मनों की तरह भून कर रख दूंगा। लेकिन कल रात वह किसी तरह भी नहीं माने। इसलिए नींद बहुत देर के बाद आई। और जब आई तो मैंने देखा कि मैं ऐसे शहर में पहुंच गया हूं जहां सभी कुछ है। मोटर, कारें, रेल, हवाई जहाज, बड़े-बड़े मकान, चौड़ी-चौड़ी सड़कें हैं। पर उन लोगों को चैन नहीं है। वह हर समय भागते ही रहते हैं। लगता है जैसे किसी ने उस शहर पर हमला कर दिया हो। मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आया, इसलिये एक-दो से पूछना भी चाहा कि आखिर यह सब क्या है। लोगों को इतनी

जल्दी क्यों है ? जब किसी ने कुछ नहीं बताया तो मैं एक सड़क पर खड़ा हो गया। सोचने लगा कि कोई तो आदमी अवश्य मिलेगा जो मेरी बात सुनेगा। पर मुझे ऐसा आदमी नहीं मिला। इसलिये मैं चिल्लाने लगा। मुझे चिल्लाते देख पुलिस आ गई।

'तुम क्यों शोर मचाते हो ?' पुलिस वाले ने पूछा।

'मैं पूछना चाहता हूं कि इस शहर में लोग क्यों भागते रहते हैं ?'

'अरे आपको इतना भी नहीं मालूम है। यहां सभी लोगों को कोई न कोई बीमारी है। इसीलिये भागते हैं कि उन्हें कहीं इलाज मिल जाये।'

'मगर डाक्टरों के पास तो उन्हें बैठना ही पड़ता होगा ?'

'तुम नये हो। शायद गांव से आये हो। इसलिये यह सब नहीं समझोगे। तुम लौट जाओ नहीं तो यह शहर तुम्हें भी पागल कर देगा। तुम्हें भी लालच पैदा हो जायेगा। तुम्हें भी पैसा कमाने की होड़ लग जायेगी। फिर तुम भी इसी तरह बीमार हो जाओगे।' पुलिस वाला बोला।

"इसीलिए मैं वहां से भाग आया। पहली बार अंग्रेजों की फौजों की तरह।"

लोगों को लगा कि सबसे अधिक गहरी बात तो हंसोड़ जी ने ही कही !.....

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा प्रकाशित

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

* प्रकृति का बदला	: प्रो० राजेन्द्र पाल सिंह
* छोटे गांव की बड़ी कहानी	: देवेन्द्र उपाध्याय
* हथेली पर सूरज	: कश्मीरी लाल जाकिर
* दुर्घटनाएं	: बिमला दत्ता
* माला के दाने	: राजेन्द्र तिवारी
* घरेलू इलाज	: मंजु पाण्डेय
* पारसमणि	: यशपाल जैन
* पेड़ बोलते हैं	: सुबोध पंडित
* नया जीवन	: ननी दत्त
* जुलूस	: प्रेमचन्द
* अधूरी कहानी	: विष्णु प्रभाकर
* जंगल बचाओ	: बिमला दत्ता
* समाज का अभिशाप	: ब्रह्म प्रकाश गुप्त
* जीवन की शिक्षा	: नारायण लाल परमार
* जागो तो सवेरा	: विमला लाल
* चाची की बातें	: निशात फारूक
* सूरज भरता पानी	: रमेशदत्त शर्मा
* कहानियां गांव की	: डा० जयनारायण कौशिक

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110 002